ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.18, NO.2, JULY-DEC,2023 /32

फैजाबाद जनपद (उ0प्र0) में शस्य गहनता में विद्यमान विषमताएं

* डॉ0 राजकुमार यादव
प्रवक्ता–(भूगोल)–एस.बी. इण्टर कॉलेज, तेरही, कप्तानगंज, आजमगढ़,
https://doi.org/10.61410/had.v18i2.140

सारांश :–शस्य गहनता से आशय किसी कृषि क्षेत्रों में फसलों की आवृत्ति से है, अर्थात् एक निश्चित कृषि क्षेत्र पर एक फसल वर्ष में कितनी बार उत्पन्न की जाती हैं। फसलों की यही आवृत्ति उस क्षेत्र विशेष की शस्य गहनता कहलाती है। शस्य गहनता या फसल गहनता कृषि विकास के विभिन्न तत्वों द्वारा प्रभावित होती है। किसी भी क्षेत्र में शस्य गहनता दो फसली क्षेत्र के द्वारा निर्धारित होती है। जिन क्षेत्रों में दो फसली क्षेत्र अधिक होगा, वहाँ फसल गहनता अधिक होगी। इसके विपरीत जहाँ दो फसली क्षेत्र कम होगा, वहाँ कृषि गहनता कम होगी।

शब्द संकेत :– शस्य गहनता, क्षेत्रीय विषमता, एकत्रीकरण, तकनीकी सुधार।

प्रस्तावना– शस्य गहनता के आकलन के संदर्भ में अनेक विद्वानों ने अपने–अपने विचार व्यक्त किये हैं। त्यागी (1972) ने शस्य गहनता के स्थान पर कृषि गहनता शब्द का प्रयोग किया है। त्रिपाठी (1970) ने शस्य गहनता के स्थान पर कृषि गहनता शब्द को उपयुक्त बताया है। इनके अनुसार कृषि गहनता द्विफसली क्षेत्र से सम्बन्धित है, जो मुख्यतः प्राकृतिक, तकनीकी, प्रबन्धकीय और जैवीय कारकों का योग है एवं जिनके फलस्वरूप वर्ष में एक से अधिक फसलें उत्पन्न की जाती है। सिंह (1974) ने इसके स्थान पर भूमि उपयोग क्षमता शब्द को उचित समझना है। इनके अनुसार जो भूमि जितनी ही उर्वर एवं क्षमतावान होगी, उस पर फसलों की आवृत्ति उतनी ही अधिक होगी। इस प्रकार शस्य गहनता व भमि क्षमता एक दूसरे के पूरक है। शस्य गहनता को निम्नलिखित सूत्र द्वारा आकलित किया गया है–

$$\text{शस्य गहनता} = \frac{\text{सकल बोया गया क्षेत्र}}{\text{शुद्ध बोया गया क्षेत्र}} \times 100$$

अध्ययन क्षेत्र–

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र उत्तर प्रदेश राज्य का एक पिछड़ा जनपद है। इसका अक्षांशीय विस्तार $26^0 33'$ से $26^0 46'$ उत्तरी अक्षांश तक तथा देशान्तरीय विस्तार $81^0 31'$ पूर्वी से $82^0 27'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। जनपद का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 2587 वर्गकिमी0 है। इसका सामान्य ढाल पश्चिम से पूरब की ओर है। जनपद की उत्तरी सीमा का निर्धारण सरयू नदी द्वारा तथा दक्षिणी सीमा गोमती नदी द्वारा निर्धारित होती है। इसके उत्तर में गोण्डा, बस्ती, पूर्व में अम्बेडकरनगर, दक्षिण पूर्व में सुलतानपुर, दक्षिण में अमेठी तथा पश्चिम में बाराबंकी जनपद की सीमाएं पायी जाती हैं। समग्र जनपद सरयू, मड़हा, कल्याणी, विसुही

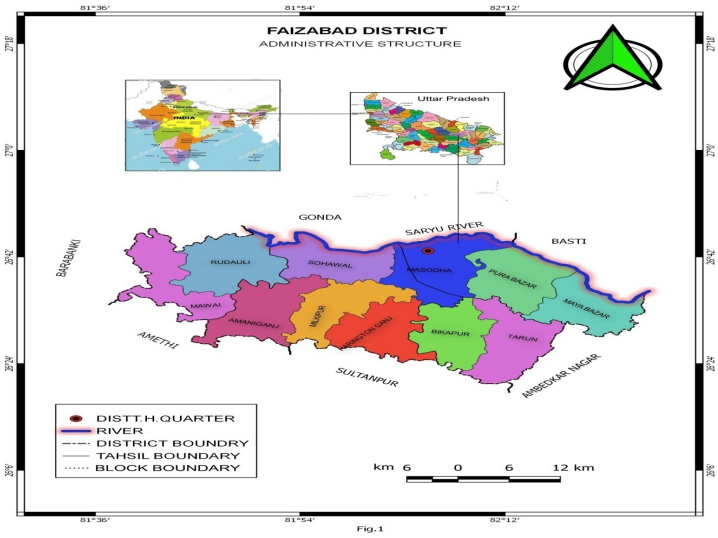

Fig.1

उ0प्र0तथा गोमती नदियों द्वारा सेवित हैं। ये ही नदियाँ जनपद की अपवाह प्रणाली बनाती हैं। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार यहाँ की कुल जनसंख्या 2470996 थी जिसमें 1259628 पुरुष तथा 1211368 महिलाएं थीं। जनपद की कुल साक्षरता 70 प्रतिशत थी जिसमें 77 प्रतिशत पुरुष तथा 56 प्रतिशत महिलाएं साक्षर पायी गयीं। अध्ययन क्षेत्र में प्रति हजार पुरुषों पर महिलाओं की संख्या 962 पायी गयी हैं।

शोध प्रविधि–

प्रस्तुत अध्ययन मूलतः द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। अध्ययन क्षेत्र की शस्य गहनता के आकलन के लिए वर्ष 2007–08 एवं 2017–18 के आकड़ों का संकलन किया गया है। आंकड़ों का एकत्रीकरण फैजाबाद जनपद द्वारा प्रकाशित सांख्यिकीय पत्रिका से किया गया है। अध्ययन को उपयोगी बनाने के लिए मध्यमान मूल्य, मानक विचलन तथा विभिन्नता गुणांक की गणना की गयी है। इसी आधार पर आलोच्य दस वर्षों की समयावधि में शस्य गहनता में विद्यमान क्षेत्रीय विषमता का आकलन किया गया है।

शस्य गहनता का क्षेत्रीय वितरण–

शस्य गहनता मूल्य के आधार पर जनपद के समस्त विकास खण्डों को तीन वर्गों निम्न मध्यम उच्च में वर्गीकृत किया गया है। फैजाबाद जनपद में वर्ष 2007–08 में फसल गहनता का औसत 159. 05 था, जो बढ़कर वर्ष 2017–18 में 169.35 हो गया। विकास खण्ड स्तर पर इसके वितरण में बड़ी असमानता देखी गयी है। जहाँ बीकापुर विकास खण्ड में शस्य गहनता सबसे कम 144 थी, वहीं सोहावल विकास खण्ड में 192 पायी गयी। इसी असमानता को दृष्टि में रखते हुए विकास खण्डों का तीन वर्गों में बाँटा गया है। शस्य गहनता के निम्न वर्ग में जनपद के उन विकास खण्डों को रखा गया है, जहाँ वर्ष–2007–08 में

सारिणी–1 फैजाबाद जनपद में शस्य गहनता का विवरण (प्रतिशत में)

वर्ग	आन्तरिक मूल्य	2007–08		आन्तरिक मूल्य	2017–18	
		वि.ख.की संख्या	विकास खण्ड का प्रतिशत		वि.ख.की संख्या	विकास खण्ड का प्रतिशत
निम्न	150 से कम	3	27.27	165से कम	3	27.27
मध्यम	150–165	5	45.46	165– 175	3	27.27
उच्च	165 से अधिक	3	27.27	175 से अधिक	5	45.46
	योग–	11	100.00	योग–	11	100.00
Statistical Values-2001-08 Mean- 159.05 S.D.- 13.42 C.V.- 8.45						
Statistical Values-2001-18 Mean- 169.35 S.D.- 14.92 C.V.- 8.81						

Source-District Statistical Bulletin 2008&2018

फसल गहनता 150 प्रतिशत से कम पायी गयी थी। इस वर्ग में तीन विकास खण्ड हरिंग्टनगंज, बीकापुर तथा तारुन आकलित किये गये। वर्ष 2017–18 में इस श्रेणी में यही विकास खण्ड पाये गये। इनकी शस्य गहनता 165 से कम पायी गयी थी। फसल गहनता के मध्यम वर्ग में वर्ष 2007–08 में 5 विकास खण्ड मसोधा, पूरा बाजार, अमानीगंज, मिल्कीपुर और रूदौली आकलित किये गये, जो कुल विकास खण्डों का 45.46 प्रतिशत है। इनमें शस्य गहनता 150 से 165 प्रतिशत के मध्य पायी गयी है, जबकि वर्ष 2017–18 में इस वर्ग में तीन विकास खण्ड समाहित थे, जो कुल विकास खण्डों का 27.27 प्रतिशत है। इसमें अमानीगंज, मिल्कीपुर तथा रूदौली सम्मिलित है। इन विकास खण्डों में शस्य गहनता 165 से 175 प्रतिशत के मध्य पायी गयी है।

फसल गहनता की दृष्टि से जनपद के तीन विकास खण्डों को उच्च वर्ग में रखा गया है। यहाँ वर्ष 2007–08 में शस्य गहनता 165 प्रतिशत से अधिक पायी गयी है। इस वर्ग में सोहावल, मया बाजार और मवई विकास खण्ड सम्मिलित हैं, जबकि वर्ष 2017–18 में इस वर्ग में विकास खण्डों की संख्या 5 पायी गयी, जो कुल विकास खण्डों का 45.46 प्रतिशत है। इसमें सोहावल, मसोधा, पूरा बाजार, मया बाजार और मवई शामिल हैं, इन सभी विकास खण्डों में शस्य गहनता 175 प्रतिशत से अधिक पायी गयी है। अध्ययन क्षेत्र में शस्य गहनता के संदर्भ में क्षेत्रीय विषमता में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। दोनों वर्षों में निम्नतम् क्षेत्रीय विषमता पायी गयी है। मानचित्र 2 से स्पष्ट है कि जनपद के दक्षिणी पूर्वी विकास खण्डों में शस्य गहनता कम तथा उत्तरी पूर्वी क्षेत्रों में अधिक पायी गयी है।

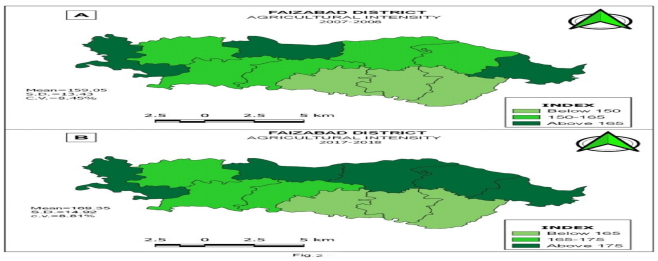

निष्कर्ष एवं सुझाव–

फैजाबाद जनपद के शस्य गहनता के अध्ययन से स्पष्ट हुआ है कि दोनों वर्षों में 65 प्रतिशत से अधिक जनपदों में शस्य गहनता मध्यमान मूल्य से अधिक पायी गयी है। यहाँ सिंचाई की सुविधाओं की उपलब्ध उदीयमान केन्द्रों की समीपता के कारण कृषकों में गहन कृषि के प्रति रुचि बढ़ी है। अध्ययन क्षेत्र के वे विकास खण्ड जहाँ फसल गहनता कम पायी गयी है, वहाँ बाढ़ की समस्या, जलजमाव मुख्य कारण है, जबकि कुछ विकास खण्डों में कम शस्य गहनता का कारण सिंचाई की सुविधाओं में कमी है। अध्ययन क्षेत्र में भौतिक समस्याओं के निवारण हेतु मृदा अपरदन, जल निकास, बाढ़ नियंत्रण, सामाजिक–सांस्कृतिक तथा आर्थिक समस्याओं के निवारण हेतु भूमि उपयोग प्रतिरूप में गहन एवं तकनीकी सुधार, सिंचाई, उर्वरक, उन्नतशील बीज, नवीन कृषि यंत्र, कीटनाशक दवाइयाँ, कृषि पर आधारित उद्योगों की स्थापना आदि से क्षेत्र को अति उच्च शस्य गहनता में परिवर्तित किया जा सकता है।

Reference

1. Tyagi, B.S. (1972): Agricultural Intensity in Chunar Tehsil District Mirzapur, U.P. National Geography. Journal of India.Vol. 18(1)
2. Tripathi, R.R. (1970): Changing Pattern of Agricultural Land use in Upar Ganga-Gomti Doab, Unpublished Ph.D. Thesis Agra University. 56.
3. Shukla, D.K. (2010) Raibareli Janpad (U.P.) Ke Gramin Vikash Men Vidyaman Chhetriya Vishamtayen Unpublished Ph.D. Thesis Dr. RML Avadh University Faizabad, P.81.
4. Mishra, T.N. (2014) Tehsil Jalalpur (Ambedkar Nagar) Men Shasya Gahanta Ka Kalik Parivartan, Journal of Integrated Development and Research. Vol. 4 No. 2 P. 108-111
4. Tripathi, Kamal (2021): Purvi Uttar Pradesh Men Jansankhya Gatyatmakta, aek Bhaugolik Vishleshan Unpublished Ph.D. Thesis RML Avadh University, Ayodhya-P-72.